पाठ 2

अकारान्त शब्दों में 'अ' का उच्चारण, संयुक्ताक्षरों के विभिन्न रूप, नासिक्य ध्वनिया, संयुक्ताक्षरों के पुराने रूप, संस्कृत वाक्य, प्रार्थना।

इस पाठ में हम संयुक्ताक्षरों के लेखन पर ध्यान देंगे। वैसे तो आप संयुक्ताक्षरों के लेखन से परिचित होंगे लेकिन इनकी कुछ विशेष बातों पर ध्यान दिलाना आवश्यक प्रतीत होता है।

2.1 जब देवनागरी लिपि में किसी व्यंजन पर कोई भी मात्रा नहीं लगी होती तो उस व्यंजन को **अ** ध्वनि के साथ बोला जाता है। जब केवल किसी व्यंजन को ही बताना होता है तो उस अक्षर के नीचे हलन्त का चिह्न (्) लगाते हैं तब उस व्यंजन का उच्चारण बिना स्वर के होता है, जैसेः

अहम्	मैं	**तत्**	वह (नपु. एक व.)
किम्	क्या	**एतत्**	यह (नपु. एक व.)
आम्	हाँ	**नगरम्**	शहर
रूपम्	रूप, शक्ल	**हृदयम्**	हृदय, दिल

टिप्पणी: हिन्दी में यदि किसी शब्द के अन्त में **अ** हो तो प्रायः उसका उच्चारण नहीं होता। हिन्दी में **कमल**, **बालक**, **सुमन** आदि शब्दों का अंतिम **अ** पूरी तरह उच्चरित नहीं होता। संस्कृत में इनका उच्चारण हिन्दी से कुछ भिन्न है तथा इनके अंत का **अ** स्पष्ट सुनाई देता है **(क-म-ल**, **बा-ल-क**, **सु-म-न**)। हिन्दी में **समता**, **अपमान** जैसे शब्दों के बीच के स्वर का लोप कर इन्हें **सम्ता**, **अप्मान** बोला जाता है। परन्तु संस्कृत में इस **'अ'** स्वर का पूर्ण उच्चारण होता है और इन्हें **स-म-ता**, **अ-प-मा-न** बोला जाता है।

2.2 संयुक्ताक्षर लेखन—जब दो व्यंजनों के बीच कोई स्वर नहीं होता तो उनके संयोग से बनने वाले अक्षर को **संयुक्ताक्षर** कहते हैं। देवनागरी लिपि में संयुक्ताक्षरों को विभिन्न प्रकार से प्रकट किया जाता है।

2.3 यदि संयुक्ताक्षर के पहले अक्षर में खड़ी पाई (रेखा) हो तो उसे हटाकर दोनों अक्षरों को मिलाकर लिखा जाता है, जैसेः- **ज् + व = ज्व, स् + त = स्त, न् + य = न्य**।

ज्वाला	ज्वाला	**शून्यम्**	शून्य
त्वम्	तू, तुम	**स्वामी**	स्वामी, मालिक
बन्धुः	संबंधी, भाई	**पुस्तकम्**	पुस्तक
न्यायः	न्याय	**सत्यम्**	सत्य

2.4 यदि **र्** के बाद कोई व्यंजन आए तो **र्** को बाद वाले व्यंजन के ऊपर (**र्**) चिह्न द्वारा लिखा जाता है; जैसेः **र् + व = र्व**, **र् + य = र्य**।

सर्वम् सब (नपु. एक व.) **आर्यः** आर्य, श्रेष्ठ

चर्या व्यवहार **धर्मः** धर्म, कर्तव्य, गुण

ध्यान रहे र् का चिह्न (र्) हमेशा शिरोरेखा के ऊपर स्वर मात्रा के बाद लिखा जाता है। यद्यपि उसका उच्चारण इस चिह्न से पूर्ववर्ती व्यंजन और स्वर से पूर्व होता है जैसेः **धर्म = ध + र्+ म**, **ऊर्मि (ऊ + र् + मि)**।

2.5 यदि संयुक्ताक्षर में **र्** किसी स्वर रहित व्यंजन के बाद आए और **र्** के बाद भी कोई स्वर हो तो उस अक्षर की आकृति के अनुसार **र्** को अलग-अलग तरह से लिखा जाता है।

(क) यदि पहले अक्षर में खड़ी पाई हो तो **र्** को खड़ी पाई के नीचे के भाग में (Z) के चिह्न से लिखा जाता है; जैसेः- **ग्+ र = ग्र**, **क् + र = क्र**, **प् + री = प्री**।

ग्रामः गाँव **घ्राणः** नाक, गन्ध की इन्द्रिय

क्रमः क्रम, सिलसिला **प्राप्तिः** प्राप्ति, पाना

(ख) द् और **ह्** के साथ **र्** के संयोग को इनके नीचे के भाग में (Z) चिह्न लगाकर लिखा जाता है, जैसेः- **द् + र = द्र**, **ह् + र = ह्र।**

द्रवः द्रव **ह्रासः** गिरावट, कमी

द्रविणम् धन **ह्रदः** तालाब

(ग) ट्, ठ्, ड्, छ् के साथ **र्** के संयोग को संयुक्ताक्षर के नीचे (a) चिह्न लगाकर लिखा जाता है, जैसेः- **ट् + र = ट्र**, **ड् + र = ड्र।**

उष्ट्रः ऊँट **राष्ट्रम्** राष्ट्र, देश

(घ) श् और **र** के संयोग को **श्र** के रूप में लिखा जाता है; जैसेः

श्रमः परिश्रम, मेहनत **श्रोत्रम्** कान, श्रवण इन्द्रिय

2.6 (क) क् और **फ्** के बाद यदि कोई व्यंजन आए तो **क्** और **फ्** के दाईं ओर के हुक को छोटा करके (क) दोनों अक्षरों को जोड़कर लिखा जाता है; जैसेः— **क् + य** = **क्य**, **क् + व = क्व**, **फ् + ल = फ्ल।**

वाक्यम् वाक्य **पक्व** पका हुआ

(ख) क् और **त** के संयोग को **क्त** (क्त) के रूप में लिखा जाता हैः

भक्तः भक्तः **शक्तिः** शक्तिः

(ग) त् और **त** के संयोग को **त्त** के रूप में लिखा जाता है; जैसेः

सत्ता अस्तित्व, होना **महत्त्वम्** **महत्त्व**

2.7 द्, ह्, ड्, ट्, छ् आदि के कुछ अक्षरों के साथ संयोग को इनके निचले भाग में लिखने की प्रथा रही है पर अब ऐसे संयुक्ताक्षरों को प्रायः हलन्त से लिखा जाता है; जैसेः- **द् + व = द्व (द्व), ह् + य = ह्य (ह्य), ट् + ठ = ट्ठ (ट्ठ), ड् + ड = ड्ड (ड्ड)**।

विद्या, विद्‌या	विद्‌या	**बुध्दिः, बुद्धिः**	बुद्धि
द्वारम्, द्‌वारम्	दरवाजा	**श्रद्धा, श्रध्दा**	विश्वास
बुद्धः, बुद्‌ध	ज्ञानी, महात्मा बुद्ध	**खट्वा, खट्‌वा**	खाट
आह्वानम्, आह्‌वानम्	पुकार, आमंत्रण	**असह्य, असह्‌य**	असहनीय

2.8 निम्नलिखित संयुक्ताक्षरों को विशिष्ट अक्षरों के रूप में लिखा जाता है; जैसेः- क् + ष = **क्ष**, **त् + र = त्र**, **ज् + ञ = ज्ञ**

छात्रः	विद्यार्थी	**चक्षुः**	ऑखे
अत्र	यहाँ	**शिक्षकः**	अध्यापक
तत्र	वहाँ	**प्रज्ञा**	बुद्धि
कक्षा	कक्षा	**ज्ञानम्**	ज्ञान
चित्रम्	चित्रा	**विज्ञानम्**	विज्ञान, विशिष्ट ज्ञान

टिपण्णीः— ज्ञ का मूल उच्चारण **ज्** और **ञ** के संयोग से होता है परन्तु उत्तर भारत में इसका उच्चारण प्रायः **ग्य** या **ग्यँ** होता है। **क्ष, त्र, ज्ञ** को देवनागरी वर्णमाला के अन्त में प्रायः स्वतंत्र वर्णों के रूप में भी दिखाया जाता है।

2.9 नासिक्य ध्वनि. पहले पाठ में हमने पढ़ा था कि प्रत्येक वर्ग का पाँचवा अक्षर नासिक्य होता है। किसी शब्द में अनासिक्य व्यंजन से पहले नासिक्य ध्वनि के लिए उस व्यंजन के वर्ग का पाँचवा अक्षर लिखा जाता है, जैसेः-

अङ्कः	अंक, चिह्न	**चञ्चल**	चंचल
अन्तः	अंत	**कण्ठः**	गला
कम्पः	कंपन	**आरम्भः**	आरंभ

अर्ध स्वर **(य, र, ल, व),** ऊष्म व्यंजन **(श, ष, स)** और **ह** से पहले नासिक्य ध्वनि का रूप कुछ अस्पष्ट-सा होता है, इसलिए सभी अर्धस्वरों और ऊष्म व्यंजनों से पहले की नासिक्य ध्वनि को प्रायः उससे पहले वाले अक्षर के ऊपर बिंदी (ं) लगाकर प्रकट किया जाता है; जैसेः-

संयमः संयम **संशयः** संदेह

अंशः भाग, अंश **संसारः** संसार

संवादः बातचीत **संहारः** विनाश

2.10 टाइप और छपाई की सुविधा के कारण संयुक्ताक्षरों में पंचमाक्षर के स्थान पर बिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, इसलिए **2.9** में ऊपर दिए गए शब्द संस्कृत में भी निम्नलिखित रूप में लिखे हुए मिल सकते हैंः

अंकः, अंतः, कंपः, चंचल, कंठः, आरंभः

टिप्पणी: हिन्दी में ये शब्द इस रूप में भी स्वीकृत हैं। (भारत सरकार द्वारा गठित वर्तनी समिति के निर्णयों के अनुसार ऐसे शब्दों को बिंदी के साथ ही लिखा जाना चाहिए।) परन्तु संस्कृत के पारम्परिक पण्डितों का आग्रह है कि इन्हें पंचमाक्षरों के साथ ही लिखा जाए। चूँकि नासिक्य व्यंजनों का निर्धारण उनके बाद वाले व्यंजन के अनुसार होता है इसलिए बिन्दु से लिखने पर भी उनके उच्चारण में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

2.11 संयुक्त अक्षर में **'इ'** की मात्रा (ि) लगाते समय पूरे संयुक्ताक्षर को एक वर्ण माना जाता है और **'इ'** की मात्रा संयुक्ताक्षर से पूर्व लिखी जाती है चाहे **'इ'** का उच्चारण संयुक्ताक्षर के बाद ही क्यों न हो, जैसेः-

शान्तिः शान्ति **मुक्तिः** मुक्ति

टिप्पणी: जब हलन्त के प्रयोग से संयुक्ताक्षर बनता है तो **'इ'** की मात्रा दूसरे अक्षर से पहले लगती है, जैसेः

बुद्धिः बुध्दि **पट्टिका** पटिया

2.12 संधि में जब दो शब्द मिलते हैं तो यदि पहले शब्द के अन्त में **ए** या **ओ** हो तो दूसरे शब्द के प्रारम्भ के **अ** का लोप हो जाता है और उसके स्थान पर अवग्रह (**ऽ**) चिह्न का प्रयोग होता है, जैसेः-

ते + अपित्रतेऽपि (वे भी), **कः + अपित्रकोऽपि** (कोई भी)

2.13 पवित्रा ओम् को **ॐ** के रूप में भी लिखा जाता है।

2.14 संस्कृत में पहले केवल विराम चिह्न (।) का प्रयोग होता था किन्तु अब प्रश्नवाचक (?), योजक (-) आदि चिह्नों का प्रयोग भी होने लगा है।

2.15 देवनागरी में संख्याएँ निम्नलिखित प्रकार से लिखी जाती हैं

अन्तर्राष्ट्रीय संख्याएँ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
देवनागरी संख्याएँ	**१**	**२**	**३**	**४**	**५**	**६**	**७**	**८**	**९**	**०**

2.16 हमने पाठ में जो शब्द पढ़े हैं उनसे कुछ वाक्य आसानी से बना सकते हैं। आइए, अब संस्कृत के कुछ वाक्य पढ़ें। संस्कृत वाक्यों में 'है, हैं, हूँ, हो' आदि के अर्थ वाली क्रियाओं का बहुधा प्रयोग नहीं किया जाता। निम्नलिखित वाक्य संस्कृत में सर्वथा स्वभाविक हैं:

तव नाम किम् ?	तुम्हारा नाम क्या है?
मम नाम गोपालः।	मेरा नाम गोपाल है।
सः मम सखा सुरेशः।	वह मेरा मित्रा सुरेश है।
एषः रमेशः। सः अपि मम सखा।	यह रमेश है। वह भी मेरा मित्रा है।
सः मम पिता। एषा मम माता।	वे मेरे पिताजी हैं। ये मेरी माताजी हैं।
तत् किम् ? तत् मम चित्राम्।	वह क्या है ? वह मेरा चित्रा है।
एतत् किम् ? एतत् तव पुस्तकम्।	यह क्या है ? यह तुम्हारी पुस्तक है।
अहं छात्राः, त्वमपि छात्राः।	मैं विद्यार्थी हूँ, तुम भी विद्यार्थी हो।
तत्रा तव कक्षा।	तुम्हारी कक्षा वहाँ है।
सः[1] कः ? सः मम शिक्षकः।	वे कौन हैं ? वे मेरे अध्यापक हैं।
सः[2] तव अपि शिक्षकः।	वे तुम्हारे भी अध्यापक हैं।
विद्या एव चक्षुः। ज्ञानम् एव शक्तिः।	विद्या ही आँख है। ज्ञान ही शक्ति है।
एतत् सर्वं सत्यम्। अत्रा न संशयः।	यह सब सच है। इसमें संदेह नहीं है।
एतत् दुःखम् असह्यम्।	यह दुःख असह्य है।
ईश्वरः एव मम बन्धुः।	ईश्वर ही मेरा बन्धु है।
अत्रा विज्ञानं, तत्रा ज्ञानम्।	यहाँ विज्ञान है, वहाँ ज्ञान है।
मम सर्वं द्रविणम् तव।	मेरा सब धन तुम्हारा है।
मम हृदयम् अपि तव।	मेरा हृदय भी तुम्हारा है।
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।	(शांति की प्रार्थना)।

टिप्पणी:- 1 और 2 वाक्यों में **सः कः** = वह कौन है? **सः मम शिक्षकः।** वह मेरा अध्यापक है। **सः तव अपि शिक्षकः** = वह तुम्हारा भी अध्यापक है आदि वाक्यों में आदर जताने के लिए हिन्दी में बहुवचन का प्रयोग होता है।

2.17 आइए, अब हम संस्कृत की बहुप्रचलित प्रार्थना को पढ़ें। लाखों भारतीय

प्रतिदिन इसका पाठ करते हैं। इसे सभी सरलता से गा सकते हैं। इसके सभी शब्दों से आप परिचित हैं। परन्तु इसे पढ़ने से पहले ध्वनि-परिवर्तन के दो नियमों को जान लेना आवश्यक है।

i) जब स्वर रहित (हलन्त) **म्** किसी शब्द के अंत में हो और उसके बाद स्वर से आरम्भ होने वाला शब्द हो तो स्वर रहित **म्** बाद वाले शब्द के आदि स्वर से मिल जाता है; जैसेः

त्वम् + अपि = **त्वमपि** = तुम भी

हृदयम् + अपि = **हृदयमपि** = हृदय भी

त्वम् + एव = **त्वमेव** = तुम ही

ii) यदि शब्द के अन्त में विसर्ग (ः) हो और उसके बाद के शब्द के आरम्भ में **च्, छ्** में से कोई व्यंजन हो तो विसर्ग **श्** में बदल जाता है।

बन्धुः + च = **बन्धुश्च** **रामः + च** = **रामश्च**

शिरः + छेदः = **शिरश्छेदः**

2.18 अब प्रार्थना का एक श्लोक पढ़िएः–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
त्वमेव सर्वम् मम देव देव॥

अर्थः- (हे ईश्वर), तुम्हीं मेरी माता हो और तुम्हीं मेरे पिता हो,
तुम्हीं मेरे संबंधी हो और तुम्हीं मेरे मित्रा हो,
तुम्हीं मेरी विद्या हो और तुम्हीं मेरी धन-संपत्ति हो,
हे परमात्मा, तुम्हीं मेरे सब कुछ हो।

2.19 आइए, अब हम संस्कृत पढ़ने का अभ्यास करें। नीचे एक प्रार्थना मंत्र और गीता का एक श्लोक दिया है। इन्हें आप बोलकर पढ़ें। मंत्र और श्लोक केवल लेखन और पठन के लिए हैं।

1. **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव**
   यद् भद्रं तन्न आ सुव॥
2. **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
   अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

2.24 अभ्यास

क. 2.19 में दिए हुए शब्दों में से ऐसे शब्द चुनिए

i) जो अकारान्त हों,

ii) जो आकारान्त हों,

iii) जिन शब्दों में नासिक्य वर्ण हों।

iv) जिनमें संयुक्ताक्षर के पहले व्यंजन की खड़ी पाई हटा दी गई हो

v) जहाँ 'र्' संयुक्ताक्षर का पहला वर्ण हो।

vi) जहाँ 'र्' संयुक्ताक्षर का दूसरा वर्ण हो।

ख. अगले पृष्ठ पर बाईं ओर दो स्तंभो में कुछ हिन्दी शब्द दिए हैं और दाईं ओर के दो स्तंभों में संस्कृत शब्द हैं। प्रत्येक हिन्दी शब्द के सामने संस्कृत के शब्द की संख्या लिखें जिसका अर्थ वही हो। पहली पंक्ति में उदाहरण देखिए:

पिता	**12**	पाठ			**1**	मम	**9**	माता
माता		अध्यापक			**2**	बालकः	**10**	पाठः
मेरा		आसान			**3**	अत्रा	**11**	तत्रा
तुम्हारा		यहाँ			**4**	शान्तिः	**12**	पिता
लड़का		वहाँ			**5**	शिक्षकः	**13**	बालिका
लड़की		क्लास			**6**	चित्राम्	**14**	च
मैं		शांति			**7**	सरल	**15**	कक्षा
चित्र		और			**8**	अहम्	**16**	तव

2.25 आइए, अब कुछ पशुओं और पक्षियों के नाम पढ़ें। इन्हें आप बोलकर याद कीजिए:

क) पशु

गौः	-	गाय	सिंहः	-	शेर
अश्वः	-	घोड़ा	व्याघ्रः	-	बाघ
अजा	-	बकरी	कुक्कुरः	-	कुत्ता
गर्दभः	-	गधा	मार्जारः	-	बिल्ली
गजः	-	हाथी	शूकरः	-	सूअर
कपिः	-	बंदर	शृगालः	-	गीदड़
हरिणः	-	हिरण	भल्लूकः	-	भालू

ख) पक्षी

मयूरः	-	मोर	बकः	-	बगुला
शुकः	-	तोता	हंसः	-	हंस
कपोतः	-	कबूतर	श्येनः	-	बाज
चटका	-	चिड़िया	पिकः	-	कोयल
काकः	-	कौआ	उलूकः	-	उल्लू
कुक्कुटः	-	मुर्गा	गृध्रः	-	गीध

अभ्यासों के उत्तर

2.24 क **(i)** अकारान्त शब्द-असह्य, अत्र, पक्व, चञ्चल।

i) आकारान्त शब्द-ज्वाला, कक्षा, सत्ता, विद्या, प्रज्ञा, चर्या, गङ्गा, श्रध्दा।

ii) नासिक्य ध्वनियों वाले शब्दः- अहम्, ग्रामः, शून्यम्, अन्तः, प्रज्ञा, ज्ञानम्, श्रमः, कण्ठः, संहारः, रूपम्, शान्तिः, राष्ट्रम्, आरम्भः, संयमः, द्वारम्, संवादः, वाक्यम्, स्वामी, अङ्कः, पुस्तकम्, चञ्चल, संशयः, धर्मः, आह्वान्, श्रोत्राम्, आनन्दः, दृश्यम्, विज्ञानम्, महत्वम्

iii) ऐसे संयुक्ताक्षर युक्त शब्द जिनमें खड़ी पाई हटा दी गई होः
ज्वाला, शून्यम्, प्राप्तिः, राष्ट्रम्, अन्तः, आरम्भः, उष्ट्रः, कम्पः, कण्ठः, शान्तिः, चसचल, स्वामी, पुस्तकम्, आनन्दः महत्वम्।

iv) संयुक्ताक्षर में पहले वर्ण के रूप में 'र्' - आर्यः, चर्या, धर्मः

v) संयुक्ताक्षर में दूसरे वर्ण के रूप में 'र्' - ग्रामः, प्राप्तिः, श्रमः, श्रध्दा, राष्ट्रम्, उष्ट्रः, द्रवः, (दः, अत्रा, छात्राः, चित्राम्, श्रोत्राम्।

vi) अन्तर्राष्ट्रीय संख्याओं का देवनागरी में लेखन

5, 4, 6, 12, 34, 57 ,129, 506, 2459, 3456, 7890, 21306, 68931

मंत्रों और श्लोकों के अर्थ

2.25 पहले आप पाठ में दिए गए मंत्रों और श्लोकों को पढ़ने की कोशिश कीजिए। धीरे-धीरे आपको इनका अर्थ थोड़ा-बहुत समझ आने लगेगा। बाद में इन के अर्थों को पढ़कर समझने का प्रयास कीजिए।

1. हे सारे जगत् के रचयिता सविता देव! आप हमारे संपूर्ण दुर्गुणों और

दुर्व्यसनों को दूर कीजिए। जो कल्याणकारी बातें हैं वे सब हमें प्राप्त कराइए।

2. हे प्रकाश और ज्ञान स्वरूप अग्नि देव! कृपया आप हमें सभी प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें और संपूर्ण ज्ञान और उत्ताम कर्म प्राप्त कराएँ। आप हमसे कुटिलता वाले पाप रूप कर्मों को दूर कीजिए। इसलिए हम लोग आपकी बहुत प्रकार से नम्रतापूर्वक स्तुति सदैव किया करें।
3. आत्मा न तो कभी पैदा होती है और न कभी मरती है। आत्मा के बारे में ऐसा भी नहीं कह सकते कि वह एक बार होकर दुबारा नहीं होती। आत्मा अजन्मा है, नित्य है, अनादि काल से है और सदा रहने वाली है। शरीर के मरने के बाद आत्मा की मृत्यु नहीं होती।
4. हे अर्जुन! जब-जब धर्म में गिरावट आती है और अधर्म बढ़ने लगता है, तब-तब मैं अपने आप को प्रकट करता हूँ और अधर्म का नाश करता हूँ।
5. हे अर्जुन! जो मनुष्य जिस प्रकार से मेरी उपासना करते हैं मैं उसी रूप में उन्हें मिल जाता हूँ। मनुष्य कहीं भी, कैसे भी व्यवहार करें, वे वास्तव में, सभी प्रकार से मेरे ही बताए मार्ग पर चलते हैं।
6. शस्त्रा इस आत्मा को काट नहीं सकते, आग इसे जला नहीं सकती। पानी इसे गीला नहीं कर सकता और हवा इसे सुखा नहीं सकती(अर्थात् आत्मा कभी नष्ट नहीं होती। नष्ट तो मनुष्य का शरीर होता है।
7. बड़े लोग जैसा आचरण या व्यवहार करते हैं सामान्य जन भी वैसा ही आचरण करते हैं। महापुरुष जिसे मानक बना देते हैं बाकी लोग उसी का अनुसरण करने लगते हैं।
8. जिस प्रकार हमारे इस शरीर में आत्मा बचपन से जवानी, और जवानी से बुढ़ापे तक पहु(चती है उसी प्रकार मृत्यु के पश्चात् यह नए शरीर में प्रविष्ट होती है। इसलिए बुध्दिमान् व्यक्ति मृत्यु के कारण विचलित नहीं होता।

लेखन अभ्यास